Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

18वीं शताब्दी में मुग़ल साम्राज्य के पराभव के कारण

मोहम्मद शकीम

शोध छात्र, मध्यकालीन एवं
आधुनिक इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज,उत्तर प्रदेश,भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 6
Page Number : 86-90

Publication Issue :
November-December-2021

Article History
Received : 15 Nov 2021
Published : 30 Nov 2021

शोध–सारांश– मुग़ल साम्राज्य जो कि मध्यकालीन भारत का सबसे विशाल और दीर्घायु साम्राज्य था जैसा कि प्रसिद्ध यूरोपीय इतिहासकार अर्नाल्ड टायनबी जो कि चक्रिय सिद्धान्त के समर्थक थे उन्होंने कहा किसी भी सभ्यता का जन्म होता है उसका विकास होता है और अन्त में उसका पतन हो जाता है उसी तरह 1526 ई0 में बाबर ने भारत में मुग़ल सत्ता की नींव डाली उसका अकबर के काल में विकास हुआ औरंगजेब के काल में चरमोत्कर्ष पर पहुँची उसके बाद एक नई सभ्यता का प्रवेश प्रारम्भ हुआ और धीरे–धीरे मुग़ल साम्राज्य का सितारा 18वीं शताब्दी में लगभग डूब गया।

मुख्य शब्द– मुगल साम्राज्य, पराभव, कारण, मध्यकालीन भारत, पतन, भारतीय, इतिहास।

18वीं शताब्दी की एक बड़ी ही महत्वपूर्ण घटना थी मुग़ल साम्राज्य का पतन। 3 मार्च 1707 ई0 को अहमदनगर में औरंगजेब की मृत्यु से भारतीय इतिहास में एक नवीन युग का पदार्पण होता है। मुग़ल साम्राज्य का वह युग जिसमें शाही दरबार की तड़क–भड़क, अमीर उमराओं की साज सज्जा और ऐश्वर्य, व्यापारियों की धन सम्पत्ति, विकसित हस्तकलाएँ और ताजमहल जैसी भव्य इमारतों के कारण भारत ने विश्व को चकाचौंध कर दिया था। औरंगजेब की मृत्यु से समाप्ति की ओर अग्रसर हुआ।[1] मुग़ल साम्राज्य का पतन एक लम्बी चलने वाली प्रक्रिया थी जिसमें बहुत से कारकों ने योगदान दिया।

प्रायः 150 वर्ष तक उत्तरोत्तर शासन करने के पश्चात मुग़ल साम्राज्य टूटने लगा। परन्तु उसमें इतनी शक्ति आ गयी थी उसको टूटने में भी 50 वर्ष लग गये।[2] और पूर्णतः विनष्ट होने में 150 वर्ष तक उसके नाम का अस्तित्व बना रहा और 1857 ई0 में प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के असफल होने पर ही अन्तिम मुग़ल सम्राट बहादुर शाह जफर को विधि पूर्वक राज्य च्युत करके उसके स्थान पर इंग्लैण्ड के सीमित राजतंत्र के अध्यक्ष को भारतीय साम्राज्य का राजमुकुट अर्पित किया जा सका।[3]

इतिहासकारों ने मुग़ल साम्राज्य के पतन को राजनैतिक त्रुटियों और शासक वर्ग के चरित्र के सन्दर्भ में समझाने की कोशिश की है इनका मानना है कि साम्राज्य में ज्येष्ठ पुत्र के उत्तराधिकार या उत्तराधिकार के अन्य किसी भी नियम का आभाव साम्राज्य में एक गम्भीर समस्या थी बाबर के उत्तराधिकारी हुमायूँ को ही अपने भाइयों के विरोध का सामना करना पड़ा था।[4] और कुछ हद तक उसकी असफलता का कारण बना। अकबर की

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

मृत्यु उपरान्त भी उत्तराधिकार का प्रश्न समस्या बना जब दरबार में एक गुट ने खुसरो का समर्थन किया।[5] जहाँगीर की मृत्यु के उपरान्त उसके दो बेटों शाहजहाँ और शहरयार के बीच उत्तराधिकार के प्रश्न पर संघर्ष हुआ, जो गृह युद्ध का रूप धारण कर गया।[6] इसके बाद उत्तराधिकार का संघर्ष तो वस्तुतः एक नियम बन गया और प्रत्येक शासक को उत्तराधिकार के युद्ध के पश्चात ही सिंहासन पर अधिकार प्राप्त हो सका। आन्तरिक कलह की इस स्थिति से जन एवं धन दोनों की अपार क्षति हुई। योग्य सेनानायक आपसी युद्ध में मारे गये राजनीतिक अस्थिरता बढ़ी क्योंकि बार–बार के युद्धों ने साम्राज्य की राजनैतिक एकाग्रता को भंग किया।[7]

इन युद्धों में प्रत्याशी राजकुमारों को सफलता प्राप्त करने के लिए प्रभावशाली अमीरों से समर्थन प्राप्त करना अनिवार्य था इस कारण अमीर वर्ग को दरबारी राजनीति में सक्रिय हस्तक्षेप का अवसर मिला। इसमें एक ओर अमीरों में गुटबन्दी तेज हो गयी और दूसरी ओर शासक अपनी योग्यता के बल पर सत्ता में आने के बजाय अमीरों की दलबन्दी पर आश्रित हो गये।[8] अयोग्य और कमजोर शासक अब सत्ता में आये। साम्राज्य में फैलते हुए संकट का निवारण करने या इन समस्याओं का समाधान करने की न तो इनमें क्षमता थी न इच्छा, अतः साम्राज्य के विघटन को रोकना सम्भव न हो सका। इसके विपरीत राज दरबार में, जीवन में भोग विलास और व्यभिचार फैलता गया। जिस तरह शासक वर्ग की जीवन शैली थी उसी तरह की जीवन शैली अमीरों ने अपनायी जिससे अमीरों का जीवन भी भ्रष्ट और व्यभिचारपूर्ण हो गया इस प्रकार शासक वर्ग के नैतिक चरित्र का पतन साम्राज्य के पतन में सहायक हुआ जो कि 18वीं शताब्दी में मुसलमानों के समक्ष एक प्रमुख संकट था।[9]

शासकों की कमजोरी, उत्तराधिकार के संघर्ष और इनमें अमीरों के हस्तक्षेप से नयी राजनैतिक समस्यायें उत्पन्न हुई अमीर वर्ग में सामंजस्य और सहयोग की भावना कमजोर पड़ी और गुटबन्दी प्रारम्भ हुई। अमीरों के ये गुट जाति पर आधारित थे ईरानी, तूरानी, भारतीय मुसलमान एवं अन्य गुट आपसी वैमनस्य और ईर्ष्या के कारण साथ मिलकर साम्राज्य के हित में कार्य करने के बजाय अपना–अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए संघर्षरत होने लगे। सम्राट की कमजोरी और दलगत राजनीति के कारण महत्वाकांक्षी सूबेदारों ने अपने–अपने प्रान्तों में स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना कर ली।[10] बंगाल में मुर्शिद कुली खाँ, अवध में बुरहानुल्मुल्क सआदत जंग और दक्षिण में निजामुल्मुल्क आसफजाह द्वारा स्वतन्त्र सत्ता ग्रहण करने से साम्राज्य का क्षेत्रीय विखण्डन तीव्र गति से हुआ। इसी क्रम में मराठों, सिखों तथा जाटों ने भी साम्राज्य के क्षेत्रों पर अधिकार करने में सफलता पायी।[11]

सबसे पहले बंगाल में मुर्शिद कुली खाँ ने अपनी स्थिति सुदृढ़ की। 1717 ई0 में वह बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया गया।[12] वह 1700 ई0 से ही दीवान के रूप में बंगाल में कार्यरत था और 1707 ई0 के बाद उसने केन्द्र को नजराना भेजना भी बन्द कर दिया था। 1722 ई0 में सआदत जंग अवध का सूबेदार नियुक्त हुआ। उसने भी अपनी मृत्यु से पहले स्वतन्त्र सत्ता ग्रहण कर ली थी दकन में 1720 ई0 में निजामुल्मुल्क को शाही प्रतिनिधि बनाया गया उसने भी 1724 ई0 में स्वतन्त्र सत्ता ग्रहण कर ली थी[13] इस तरह साम्राज्य का समस्त पूर्वी और दक्षिणी भाग टूट कर अलग हो गया। 1719 ई0 में मराठे भी दकन की चौथ और सरदेशमुखी हासिल कर चुके थे अब वे मालवा और गुजरात पर भी चढ़ाई करने लगे थे 1725 ई0 में सूरजमल के नेतृत्व में जाटों ने स्वतन्त्र राज्य की स्थापना कर ली थी। छत्रसाल के नेतृत्व में बुन्देले बहादुर शाह के समय से ही स्वतन्त्र हो चुके थे राजपुताना के क्षेत्र में भी मुग़ल सत्ता को निरन्तर चुनौती बनी हुई थी।[14]

मुग़ल साम्राज्य के पतन में इन आन्तरिक समस्याओं के साथ–साथ विदेशी शक्तियों का भी योगदान था 1739 ई0 में ईरॉन के शासक नादिरशाह ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की। उसने करनाल के युद्ध में मुग़लों की सेना

को पराजित किया और दिल्ली पर अधिकार कर लिया। मुग़ल सम्राट मुहम्मदशाह वस्तुतः नादिरशाह का बन्दी था नादिरशाह के आक्रमण के नतीजे में दिल्ली में बड़े पैमाने पर लूटमार, नरसंहार हुआ। नादिरशाह ने 70 करोड़ रुपये से ज्यादा धन दिल्ली से लूटा जिसमें मयूर सिंहासन और कोहिनूर हीरा भी शामिल था। मुग़ल साम्राज्य अब पश्चिम में सहारनपुर से नागौर तक, पूरब में फर्रूखाबाद तक और गंगा के किनारे से दक्षिण में चम्बल तक सिमट कर रह गया था। इस पराजय ने मुग़ल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को नष्ट कर दिया साम्राज्य की कमजोरी अब सर्वविदित थी सैनिक दुर्बलता ने विघटनकारी शक्तियों को बल दिया। मराठों ने अपने प्रभाव में अत्यधिक वृद्धि कर ली, और मुग़ल दरबार में भी उनका प्रभाव सर्वोपरि हो गया।[15]

इसके अलावा बची खुची कसर 1761 ई0 के पानीपत के तृतीय युद्ध ने पूरी की। 1761 ई0 में दूसरा विनाशकारी आक्रमण काबुल के शासक अहमदशाह अब्दाली द्वारा किया गया। तब तक मुग़ल सम्राट की संप्रभुता मात्र एक औपचारिकता रह गयी थी और अहमदशाह अब्दाली की सेना का सामना करने के लिए मराठों ने पानीपत की तीसरी लड़ाई लड़ी। अब्दाली की सेना ने मराठों को पराजित करके उनकी शक्ति को तोड़ दिया, मगर उसने भारत में अधिकार स्थापित करने का कोई प्रयास नहीं किया इस प्रकार उत्तरी भारत में एक राजनैतिक शून्य स्थापित हुआ जिससे अंगेजों द्वारा अपनी सत्ता की स्थापना का काम आसान हो गया।[16]

भारत में विदेशी व्यापारी कम्पनियों का आगमन मुग़ल साम्राज्य के चरमोत्कर्ष के काल 1613 ई0 में ही आरम्भ हो गया था[17] अपनी शक्तिशाली नौसेना के कारण यूरोपीय देश समुद्र पार व्यापार करने के लिए 16वीं शताब्दी से ही सक्रिय हो चुके थे पुर्तगालियों ने तो मुग़ल साम्राज्य की स्थापना के पहले ही भारतीय पश्चिमी तट पर अपना अधिकार कर लिया था मुग़ल बादशाह जहाँगीर ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी को भारत में व्यापार करने की अनुमति दी थी।[18] मुग़ल शासकों ने विदेशी व्यापार से प्राप्त आर्थिक लाभ के कारण इन कम्पनियों को प्रश्रय दिया परन्तु इनकी अनुशासनहीनता और महत्वाकांक्षा पर उन्होंने रोक भी लगाये रखी। शाहजहाँ और औरंगजेब द्वारा पुर्तगालियों और अंग्रेजों के विरुद्ध कार्यवाहियाँ भी की गयी फिर भी शक्तिशाली नौसेना के आभाव में मुग़ल सम्राट इन कम्पनियों को भारत से निष्काषित करने में असमर्थ थे। मुग़ल केन्द्रीय सत्ता की कमजोरी और दक्षिण में व्याप्त अराजकता ने अंग्रेजों को अपनी राजनैतिक शक्ति के विस्तार का अवसर प्रदान किया और अन्ततः उन्होंने भारत में अपना शासन स्थापित कर लिया।[19]

मुग़लों का सैन्य संगठन कमजोर और त्रुटिपूर्ण था सैनिकों में अनुशासन और प्रशिक्षण का आभाव था जिसके कारण वे यूरोपीय कम्पनियों की सुसंगठित सेनाओं का सामना करने में असमर्थ थी स्मरणीय है कि कम्पनियों की सेना भी मुख्यता भारतीय सैनिकों पर ही आधारित थी इसलिए सैन्य संगठन का मुख्य दोष नेतृत्व की अक्षमता और भ्रष्टाचार में निहित था मुग़ल सेना में गतिशीलता का आभाव था उसका तोपखाना भी कमजोर और पिछड़ा हुआ था सबसे बढ़कर मुगलों के पास नौसेना का आभाव था इस कारण वे अपनी सामुद्रिक सीमा की रक्षा करने या यूरोपीय शक्तियों की घुसपैठ को रोकने में सक्षम नहीं हो सके।[20]

मुग़ल साम्राज्य के पतन में एक महत्वपूर्ण कारण है जागीरदारी संकट।[21] इतिहासकार इरफान हबीब एवं सतीश चन्द्र ने साम्राज्य के पतन में जागीरदारी संकट को विशेष महत्व दिया है। इरफान हबीब के अनुसार यह एक आर्थिक समस्या थी जिसके अन्तर्गत जागीरों की घटती हुई आमदनी के कारण किसानों पर करों का बोझ बढ़ा इस कारण कृषक विद्राही हो गये और कई स्थानों पर साम्राज्य में विप्लव भड़क उठे। सतीश चन्द्र के अनुसार यह प्रबन्धन की समस्या थी क्योंकि जिस अनुपात से जागीरदारों की संख्या बढ़ रही थी उस

अनुपात में जागीर में देने योग्य भूमि नहीं उपलब्ध थी इसलिए अच्छी जागीरों की प्राप्ति के लिए होड़ मच गयी और गुटबन्दी की प्रक्रिया तेज हुई। अतहर अली के अनुसार दकन में औरंगजेब द्वारा साम्राज्य विस्तार के कारण दकनी अमीरों का एक बड़ा वर्ग जमींदारों की श्रेणी में शामिल हो चुका था मगर इसके लिए पर्याप्त मात्रा में जागीरें उपलब्ध नहीं थी अतः बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हुई। कम जागीरों का अधिक जागीरदारों के बीच वितरण एक समस्या बन गया। इस समस्या ने अमीरों में गुटबन्दी को प्रोत्साहित किया अच्छी एवं लाभदायक जागीरों की प्राप्ति के लिए अमीरों में आपसी होड़ मच गयी और इससे मनसबदारी प्रथा एवं केन्द्रीय प्रशासन की कार्यकुशलता पर बुरा असर पड़ा। उत्तरवर्ती मुग़ल शासकों के काल में जब केन्द्रीय शक्ति शिथिल पड़ी और जागीरदारों ने अपने अधिकारों का दुरुपयोग प्रारम्भ किया तभी राजनैतिक संकट उत्पन्न हुआ और मुग़ल साम्राज्य के पतन में जागीरदारी संकट मील का पत्थर साबित हुआ।[22] 1757 ई0 में प्लासी विजय के फलस्वरूप अंग्रेजों ने मुग़लों को दबाने में अपनी महती भूमिका अदा की। 1764 ई0 बक्सर विजय ने उसको और मजबूती प्रदान की धीरे–धीरे लगभग 1803 ई0 तक आते–आते अंग्रेजों ने सत्ता की बागडोर अपने हाथों में ले ली मुग़ल शासक केवल कठपुतली मात्र रह गये थे भले ही अन्तिम मुग़ल बादशाह बहादुर शाह जफर 1857 ई0 तक बादशाह बना रहा लेकिन वास्तविक सत्ता अंग्रेजों के हाथ में ही थी। और अंतोगत्वा मुग़ल साम्राज्य का पतन हो गया।

निष्कर्ष रूप में यह कह सकते हैं कि मुग़ल साम्राज्य जो कि मध्यकालीन भारत का सबसे विशाल और दीर्घायु साम्राज्य था जैसा कि प्रसिद्ध यूरोपीय इतिहासकार अर्नाल्ड टायनबी जो कि चक्रिय सिद्धान्त के समर्थक थे उन्होंने कहा किसी भी सभ्यता का जन्म होता है उसका विकास होता है और अन्त में उसका पतन हो जाता है उसी तरह 1526 ई0 में बाबर ने भारत में मुग़ल सत्ता की नींव डाली उसका अकबर के काल में विकास हुआ औरंगजेब के काल में चरमोत्कर्ष पर पहुँची उसके बाद एक नई सभ्यता का प्रवेश प्रारम्भ हुआ और धीरे–धीरे मुग़ल साम्राज्य का सितारा 18वीं शताब्दी में लगभग डूब गया।

मुग़ल साम्राज्य के पतन की व्याख्या एक कठिन प्रश्न है और किसी एक विचार या तर्क को ही इसमें मुख्य कारण मानना तर्क संगत नहीं है कुल मिलाकर पाँच विचारधाराएँ साम्राज्य के पतन की व्याख्या के सन्दर्भ में प्रस्तुत की गयी है।

पहला है परम्परागत व्याख्या जिसमें शासक वर्ग के चारित्रिक पतन, राजव्यवस्था के दोष, सैनिक दुर्बलता और इंग्लिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के हस्तक्षेप को महत्वपूर्ण कारणों के रूप में देखा गया है दूसरा है औरंगजेब का उत्तरदायित्व की चर्चा जिसमें उसकी धार्मिक दकन और राजपूत नीतियों को साम्राज्य के पतन का कारण माना गया है तीसरा है केन्द्रीय व्यवस्था की विफलता जिसमें जागीरदारी संकट और इसके विभिन्न आयाम, आर्थिक प्रबन्धन सम्बन्धी प्रशासनिक, जमींदार वर्ग की भूमिका आदि को साम्राज्य के विघटन का कारण माना गया है। चौथा है सांस्कृतिक पिछड़ेपन का सिद्धान्त जिसमें पश्चिमी जगत में होने वाली प्रौद्योगिकी और सैनिक एवं आर्थिक विकास एवं प्रगति की तुलना में एशियाई साम्राज्यों के पिछड़े होने का तर्क दिया गया है पाँचवा है क्षेत्रीय शक्तियों के मजबूत होने का विचार जो वस्तुतः भारतीय इतिहास के वृहद परिप्रेक्ष्य में केन्द्रोन्मुखी और केन्द्र विरोधी प्रवृत्तियों के बदलते हुए संतुलन के तर्क पर आधारित है।

कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि मुग़ल साम्राज्य के विध्वंस के लिए कोई एक कारण नहीं हो सकता। अपितु मुग़लों का पतन कई कारणों का सम्मिलित परिणाम था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रिज्वी, एस0ए0ए0, द वण्डर दैट वाज इंडिया भाग–2 पीकाडोर लन्दन 2018, पृ0 96.
2. बंद्योपाध्याय, शेखर प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद, ओरियंट ब्लैकस्वान हैदराबाद 2015, पृ0 178, 179.
3. मार्शल, पी0जे0 दे एट्टीन्थ सेन्चुरी इन इंडियन हिस्ट्री, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस दिल्ली 2009, पृ0 63.
4. पूर्वोक्त, द वण्डर दैट वाज इंडिया भाग–2, पृ0 96.
5. त्रिपाठी, आर0पी0 मुग़ल साम्राज्य का उत्थान एवं पतन अनु0 कालिदास कपूर, सेण्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद 1999, पृ0 327.
6. त्रिपाठी, आर0पी0, राइज एण्ड फाल आफ दि मुग़ल अम्पायर, सेण्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद 1991, पृ0 177.
7. आलम, मुजफ्फर, दि क्राइसिस ऑफ इम्पायर इन मुग़ल नार्थ इंडिया, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस दिल्ली, पृ0 09.
8. वर्मा, हरिश्चन्द्र, मध्यकालीन भारत, भाग–2 हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली 2015, पृ0 699.
9. पूर्वोक्त दि क्राइसिस आफ इम्पायर इन मुग़ल नार्थ इंडिया, पृ0 21.
10. वही, पृ0 21, 22.
11. चन्द्र, सतीश, उत्तर मुग़लकालीन भारत (1707–1740), हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली 2003, पृ0 181–82.
12. पूर्वोक्त, प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद पृ0 13.
13. वही, पृ0 16.
14. अहमद, इम्तेयाज, मध्यकालीन भारत एक सर्वेक्षण, नेशनल पब्लिकेशन, पटना 2016, पृ0 403.
15. वही, पृ0 403, 404.
16. वही, पृ0 404.
17. पूर्वोक्त, प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद पृ0 36.
18. वही, पृ0 36.
19. वही, पृ0 37.
20. पूर्वोक्त, मध्यकालीन भारत एक सर्वेक्षण, पृ0 404.
21. वही, पृ0 408, 409.
22. डॉ0 अली, मुबारक, आखिरी अहद–ए–मुग़लिया का हिन्दुस्तान, अलहसनात पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2013, पृ0 45–46.